हम भारत को भारतीयता के आधार पर खड़ा करना चाहते है,
और उसी काम में हम लगे हुए हैं।

प्रेरणास्त्रोत
अमर बलिदानी
श्री राजीव भाई दीक्षित

स्वदेशी गुरुकुलम्

जानकारी पत्रक

विक्रम संवत् २०७१-२०७२

स्वदेशी गुरुकुलम्

५९/१, वररुचि मार्ग, फ्रीगंज, उज्जैन ४५६०१०, मध्य प्रदेश, भारत
दूरभाष : ०७३४-२५३००३३, मोबाईल : ०९०९८८३५७६०
ईमेल : info@swadeshigurukulam.com, वेबसाईट : www.SwadeshiGurukulam.com

www.SwadeshiGurukulam.com

ॐ

॥ वंदे मातरम् ॥

स्वदेशी गुरुकुलम्

परिचय

स्वदेशी गुरुकुलम् की स्थापना अमर बलिदानी श्री राजीव भाई दीक्षित की प्रेरणा से विक्रम संवत् 2070 कार्तिक कृष्ण षष्ठी (25 अक्टुबर 2013 ई.) को भारतवर्ष की प्राचीन शिक्षा नगरी अवंतिका (वर्तमान उज्जैन) में हुई। बाबा महाकालेश्वर की नगरी एवं योगेश्वर श्री कृष्ण की शिक्षा स्थली उज्जैन का आध्यात्म के साथ-साथ शिक्षा एवं विज्ञान के क्षेत्र में भी इतिहास लाखों वर्ष पुराना है जिसका उल्लेख हमारे विभिन्न ऐतिहासिक ग्रंथों में जानने को मिलता है। स्वतंत्र भारत के महान क्रांतिकारी विचारक तथा हमारे गुरु एवं प्रेरणास्त्रोत अमर बलिदानी श्री राजीव भाई दीक्षित की प्रेरणा से ऐसी ऐतिहासिक एवं पवित्र धरा पर एक ऐसे शिक्षण केंद्र की नींव रखने का विचार हमें आया जिसके माध्यम से हम संपूर्ण भारतवर्ष में पुनः भारतीय शिक्षा पद्धति एवं गुरुकुल परंपरा को स्थापित कर सकें। स्वदेशी गुरुकुलम् इसी दिशा में उठाया गया कदम है। आज से लगभग 200 वर्ष पूर्व अंग्रेजों द्वारा हमारे देश के 7 लाख से अधिक उच्च शिक्षा प्रदान करने वाले गुरुकुलों को कानून बनाकर नष्ट करके उनके कुलपति, प्राचार्यों, आचार्यों आदि की हत्या की गई थी और इस तरह अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा पद्धति की गुरुकूल परंपरा को समाप्त कर दिया था। अंग्रेजों द्वारा किया गया वह दुष्कृत्य आज भी भारत के शिक्षा इतिहास का काला अध्याय बना हुआ है क्योंकि इस दुष्कृतय के बाद एक अंग्रेज अधिकारी लार्ड टी.बी. मैकॉले (थॉमस बेबिंगटन मैकॉले) ने भारत में एक ऐसे शिक्षा तंत्र (इंडियन एज्यूकेशन सिस्टम) को जन्म दिया जिसका उद्देश्य भारत की आने वाली पीढ़ियों को हमेशा के लिए अपना मानसिक गुलाम बनाना था। आज हमारा राष्ट्र उसी षड़यंत्र के अंतर्गत भाषा, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, कानून, उद्योग, व्यापार, विचार आदि प्रत्येक स्तर पर अंग्रेजियत अथवा विदेशियत का गुलाम हो चूका है। आज भी हमारे देश में उच्च शिक्षा एवं न्याय मातृभाषा में प्राप्त नहीं किया जा सकता वह केवल अंग्रेजी में दिया जाता है, विज्ञान एवं तकनीक के नाम पर विदेशी कचरा हमारे देश में डाला जा रहा है, पूरा राष्ट्र रोगी होकर विदेशी कंपनियों की दवाईयां खाकर दिन काट रहा है, स्वदेशी उद्योग को नष्ट किया जा चूका है, व्यापार विदेशी कंपनियों के हाथों में है और हमारे युवाओं को केवल नौकरी करने के लिए तैयार किया जा रहा है। तथाकथित स्वतंत्रता के बाद भी इन सभी समस्याओं के व्याप्त होने का एक मूल कारण है कि आज भी हमारे देश के युवा इस विदेशी शिक्षण पद्धति में पढ़ते हुए मानसिक रुप से गुलाम हो चूके है। वे अपनी भाषा, संस्कृति, ज्ञान, चिकित्सा, विज्ञान, इतिहास, तकनीक आदि सभी से दूर हो गए है और उसमें विश्वास नहीं रखते। स्वदेशी गुरुकुलम् सभी धर्म, जाति, वर्ग, वर्ण, शिक्षा स्तर के लोगों को भारतीय शिक्षा प्रदान करते हुए उन्हें आत्मनिर्भर बनाएगा। उन्हें रोजगार के नए अवसर प्रदान करेगा। स्वदेशी गुरुकुलम् देश की सभी समस्याओं को शिक्षा के माध्यम से मिटा कर भारत के युवाओं को अपने गौरवमयी इतिहास, परंपरा एवं संस्कृति से जोड़ते हुए भाषा, शिक्षा, विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, उद्योग, व्यापार आदि क्षेत्रों में आत्मनिर्भर, सक्षम एवं भारतीय बनाएगा। भारत को पुनः स्वदेशी, स्वावलंबी, स्वाभिमानी, सामर्थ्यवान, समृद्ध, स्वस्थ बना कर विश्वगुरु बनाना यही स्वदेशी गुरुकुलम् का स्पष्ट उद्देश्य है और इसे पूरा करने के लिए हम कृतसंकल्पित एवं कृतनिश्चयी है।

आचार्य अश्विनी सोनी
आद्यसंस्थापक, स्वदेशी गुरुकुलम्

स्वदेशी गुरुकुलम् के उद्देश्य

स्वदेशी गुरुकुलम् की स्थापना विक्रम संवत् 2070 कार्तिक कृष्ण षष्ठी (25 अक्टुबर 2013 ई.) को निम्नलिखित प्रमुख उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए की गई।

- संपूर्ण भारतवर्ष में गौहत्या बंद करवाकर युवाओं को गौमाता के माध्यम से आरोग्य एवं अर्थोपार्जन करने की शिक्षा प्रदान करना।
- संपूर्ण भारतवर्ष के विद्यार्थियों को पुनः गुरुकुल परंपरा पर आधारित भारतीय शिक्षण व्यवस्था में लाकर, उच्च शिक्षा का स्वदेशीकरण अर्थात् भारतीयकरण करना।
- उच्च शिक्षा को संस्कृत, हिंदी, मराठी, तमिल, तेलगु, कन्नड़, मलयालम, उड़ीया, गुजराती, पंजाबी, बांग्ला एवं अन्य सभी भारतीय भाषाओं में उपलब्ध करवाना। उच्च शिक्षा में अंग्रेजी भाषा की माध्यम के रुप में अनिवार्यता समाप्त करवा कर उसे केवल भाषा के रुप में सिमित करना।
- प्रत्येक भारतीय के लिए भारत की सभी भाषाएं सिखने हेतु पाठ्यक्रम आरंभ करना।
- जाति, धर्म, वर्ण, वर्ग, आयु, क्षेत्र अथवा औपचारिक शैक्षिक योग्यता पर विचार किए बिना, भारतीय गुरुकुल पद्धति में शिक्षा पाने के इच्छुक सभी विधार्थियों को उच्च कोटि की शिक्षा उपलब्ध कराने की व्यवस्था करना।
- स्वदेशी उद्योग एवं व्यवसाय को मूल में रखकर, आवश्यकता पर आधारित शिक्षा पाठ्यक्रम प्रदान करना।
- भारत में गुरुकुल शिक्षा पद्धति को पुनः प्रचारित एवं प्रसारित करना।
- भारत की प्राचीन एवं श्रेष्ठ चिकित्सा पद्धतियों की विभिन्न पाठ्यक्रमों के अंतर्गत शिक्षा प्रदान करना।
- भारत की प्राचीन पाककला अर्थात् रसोईघर विज्ञान की सही शिक्षा प्रदान करना क्योंकि वर्तमान समय में रोगों का एक मुख्य कारण पश्चिमी भोजनशैली एवं विकृत रसोई विज्ञान भी है।
- आयुर्वेद आधारित सात्विक दिनचर्या, ऋतुचर्या एवं ब्रम्हचर्य का शिक्षा के रुप में ज्ञान देना। जिससे वर्तमान समय की शारीरिक एवं सामाजिक विकृतियों को दूर किया जा सकें।
- भारत के कृषक भाईयों को पूर्ण प्राकृतिक एवं रसायन मुक्त वैदिक कृषि की शिक्षा प्रदान करना।
- विभिन्न प्रकार के गृह उद्योग एवं उच्च तकनीक उद्योग स्थापित करने की शिक्षा पाठ्यक्रम के रुप में प्रदान करना।
- भारतीय शास्त्रीय गीत, संगीत, नृत्य, वाद्ययंत्रों आदि की पाठ्यक्रम के रुप में शिक्षा देना।
- भारतीय कलाओं जैसे चित्रकला, मूर्तिकला आदि की पाठ्यक्रम के रुप में शिक्षा देना।
- भारतीय बर्तन निर्माण कला को विशेष रुप से प्रोत्साहित करते हुए इसकी पाठ्यक्रम के रुप में शिक्षा देना।
- भारतीय खेलों को प्रोत्साहित करने हेतु गुरुकुल के अंतर्गत अधिक से अधिक भारतीय खेलों को सिखाने की श्रेष्ठतम व्यवस्था करवाना।
- भारत की खादी एवं अन्य वस्त्र निर्माण तकनीक की शिक्षा प्रदान करना तथा इसके प्रोत्साहन एवं वैज्ञानिक लाभों की सामाजिक जागृति के लिए स्वदेशी गुरुकुलम् के सभी विद्यार्थियों एवं स्वदेशी मंदिर के अंतर्गत आने वाले सभी साथियों के लिए हस्तनिर्मित भारतीय पोषाक पहनना अनिवार्य करना।
- इस प्रकार गौ-धर्म-राष्ट्र रक्षार्थ स्वदेशी गुरुकुलम् द्वारा अपने उद्देश्यों में वृद्धि की जा सकती है। और उन्हें पूरा करने के लिए हम सभी तन-मन-धन से संकल्पबद्ध हैं।

पाठ्यक्रम

मास्टर डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी

पाठ्यक्रम अवधी : 1 वर्ष
शिक्षण के प्रकार : अंशकालिक
सैद्धांतिक विषय : 4 प्रायोगिक विषय : 4
न्यूनतम योग्यता : 12वी उत्तीर्ण
शिक्षण माध्यम : हिन्दी
प्रवेश माह : पूरे वर्ष

डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी

पाठ्यक्रम अवधी : 1 वर्ष
शिक्षण के प्रकार : अंशकालिक
सैद्धांतिक विषय : 3 प्रायोगिक विषय : 3
न्यूनतम योग्यता : 10वी उत्तीर्ण
शिक्षण माध्यम : हिन्दी (इस पाठ्यक्रम में अंग्रेजी केवल विषय के रुप में होगा, माध्यम के रुप में नहीं)
प्रवेश माह : पूरे वर्ष

शुल्क विवरण

मास्टर डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी : अंशकालिक

सैद्धांतिक शिक्षण शुल्क : रु. 15000/- (प्रवेश शुल्क, शिक्षण शुल्क एवं परीक्षा शुल्क सम्मिलित), (पुस्तकें, पाठ्य सामग्री एवं अन्य सुविधाओं का शुल्क अतिरिक्त एवं ऐच्छिक होगा)

प्रायोगिक प्रशिक्षण शुल्क : प्रशिक्षण निःशुल्क प्रदान किया जाएगा, आवासीय प्रायोगिक प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों को केवल भोजन, व्यवस्था एवं ठहरने का शुल्क देना होगा (जो कि प्रशिक्षण शिविर की तिथी के साथ ही घोषित किया जायेगा)। प्रत्येक विद्यार्थी को पूरे साल में 3 आवासीय प्रायोगिक प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रशिक्षण शिविर 5 से 7 दिवस का होगा।

डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी : अंशकालिक

सैद्धांतिक शिक्षण शुल्क : रु. 12000/- (प्रवेश शुल्क, शिक्षण शुल्क एवं परीक्षा शुल्क सम्मिलित), (पुस्तकें, पाठ्य सामग्री एवं अन्य सुविधाओं का शुल्क अतिरिक्त एवं ऐच्छिक होगा)

प्रायोगिक प्रशिक्षण शुल्क : प्रशिक्षण निःशुल्क प्रदान किया जाएगा, आवासीय प्रायोगिक प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने के लिए विद्यार्थियों को केवल भोजन, व्यवस्था एवं ठहरने का शुल्क देना होगा (जो कि प्रशिक्षण शिविर की तिथी के साथ ही घोषित किया जायेगा)। प्रत्येक विद्यार्थी को पूरे साल में 3 आवासीय प्रायोगिक प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रशिक्षण शिविर 5 से 7 दिवस का होगा।

छात्रवृत्ति : सभी पाठ्यक्रमों में भाग लेने वाले आर्थिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों को उनकी आर्थिक स्थिति एवं योग्यता के आधार पर 100% तक छात्रवत्ती मिल सकेगी।

पंचगव्य थेरेपी (पंचगव्य चिकित्सा पद्धति) क्या है?

पंचगव्य का अर्थ होता है – भारतीय वंश की गाय से प्राप्त पांच गव्य अर्थात् गौमूत्र, गोबर, दूध, घी एवं दही। पंचगव्य शब्द का उपयोग भारतीय वंश की गाय से प्राप्त इन प्रमुख पांचों गव्यों के संयोग से बनी औषधियों के लिए भी किया जाता है। सभी पांच गव्य कई रोगों के उपचार हेतु औषधीय गुण रखते है एवं चिकित्सा के लिए इनका आयुर्वेदानुसार अकेले तथा अन्य जड़ी-बुटियों के साथ प्रयोग किया जाता है। वाष्पिकृत गौमूत्र जिसे 'गौमूत्र अर्क' भी कहा जाता है, एक प्रबल कैंसररोधी एवं एंटी-एचआईवी पदार्थ भी है। गौमूत्र मनुष्य शरीर के तीनों दोषों (वात, पित्त एवं कफ) को संतुलित करता है, इसलिए यह किसी भी शाकाहारी जीव द्वारा स्वस्थ बने रहने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

आज आधुनिक विज्ञान द्वारा गौमूत्र की औषधी रूप में उपयोगिता सिद्ध हो चूकी है, गौमूत्र पर कई देशों द्वारा एंटी-कैंसर, एंटी-माइक्रोबियल, एंटी-फंगल, एंटी-टी.बी. आदि कई बिमारियों के उपचार हेतु पेटेंट लिए गए हैं जैसे-

अमेरिका द्वारा US6410059, US6896907, US7235262, US7718360, US20020164378 आदि।
चीन द्वारा CN103163257, CN201237565, CN101040998 आदि।
फ्रांस द्वारा WO2002032436, WO2002096440, WO2012127498 आदि।
यूरोप द्वारा EP1330253 आदि।

ऐसे ही दुनिया के कई देशों द्वारा गौमूत्र का चिकित्सकीय महत्व समझ आते ही उस पर तरह-तरह के पेटेंट लेने की होड़ लगी हुई है। लेकिन वहीं हमारे देश में हमारी सरकार की लापरवाही की वजह से आज भी अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण स्थिती है और भारत के कई लोग हमारी परंपरागत भारतीय चिकित्सा पद्धति एवं गाय के विज्ञान में अपना विश्वास खो चुकें हैं, लेकिन अब जबकि कई देशों की वैज्ञानिक संस्थाएं भारतीय गाय के मूत्र का औषधीय उपयोग होने के प्रमाण दे रही है, ऐसे में अब हमारे लोग अपनी स्वयं की चिकित्सा पद्धति की कार्यक्षमता पर ज्यादा संतुष्ट दिखाई देंगे, इसे विश्वव्यापी रूप से स्वीकारेंगे, अपने स्वास्थ्य को पुनः प्राप्त करने के लिए इसका प्रयोग करेंगे और इससे लाभान्वित होंगे। इसकी सहायता से भारत को चिकित्सा एवं दवा क्षेत्र में हो रही विदेशी लूट से भी बचाया जा सकेगा जो कि इस समय प्रतिवर्ष कई लाख करोड़ रुपयों में हो रही है। कई देशों के अनुसंधान से यह सिद्ध हुआ है कि भारतीय वंश की गाय का गौमूत्र कैंसररोधी, एंटी-माइक्रोबियल, एंटी-फंगल, एंटी-टी.बी. आदि कई बिमारियों की अचूक दवा है। भारतीय गाय के मूत्र का वाष्पिकृत भाग सक्रियतावर्धक तथा बॉयोएक्टिव अणुओं के लिए उपलब्धता सुलभ करने सहित संक्रामणरोधी एवं कैंसररोधी सिद्ध हुआ है।

पंचगव्य थेरेपी में उपयोग होने वाली औषधियों से किसी भी तरह का दुष्प्रभाव नहीं होता है तथा यह 100% सुरक्षित एवं प्राकृतिक हैं।

पंचगव्य पाठ्यक्रम के लाभ

- सभी प्रमाण-पत्र भारत सरकार द्वारा प्रवर्तित राष्ट्रीय विकास एजेंसी 'भारत सेवक समाज' द्वारा प्रदान किए जाएंगे।
- भारत एवं विदेशों के निजी चिकित्सालयों, विभिन्न विशेषज्ञता वाले चिकित्सालयों एवं निजी औषधी निर्माण ईकाईयों में रोजगार के अवसर होंगे।
- विभिन्न रोगों से पीड़ित लोगों को स्वास्थ्य लाभ प्रदान करने वाला सस्ता, सुलभ एवं सुरक्षित उपचार प्रदान किया जा सकेगा।

पंचगव्य पाठ्यक्रम के उद्देश्य

भारत के विभिन्न क्षेत्रों के, विभिन्न औषधियों एवं चिकित्सा विज्ञान के जानकार या उनमें रूचि रखने वाले लोग जो समाज एवं देश की सेवा करना चाहते है उन्हें पंचगव्य थेरेपी सिखने के साथ-साथ भारत की अन्य चिकित्सा पद्धतियों (जो वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के अंतर्गत आती हो) का ज्ञान लेने के लिए भी मार्गदर्शन मिलेगा।

- यह पाठ्यक्रम भारत की सभी गौशालाओं को स्वावलंबी बनाते हुए उन्हें समाज के लिए चिकित्सकीय परिप्रेक्ष्य में भी उपयोगी बनाने में हितकर होगा।
- विभिन्न रोगों से ग्रस्त आमजन को रोगमुक्त करने के लिए उचित चिकित्सा प्रदान करना।
- पंचगव्य एवं भारतीय चिकित्सा पद्धतियों के संबंध में लोगों को जागरूक करना।
- भारत के युवाओं के लिए स्वावलंबी एवं सम्मानजनक रोजगार तैयार करना।
- भारत की गौशालाओं को समृद्ध बनाना।
- भारत के सभी गौपालकों के लिए रोजगार का नया अवसर प्रदान करना।
- भारत की अर्थव्यवस्था में गाय के महत्व को सिद्ध करना।
- भारत की कृषि व्यवस्था में गाय के महत्व को सिद्ध करना।
- भारत की चिकित्सा व्यवस्था में गाय के महत्व को सिद्ध करना आदि।

आवेदन प्रक्रिया

योग्य व्यक्ति प्रवेश के लिए अपना आवेदन निम्नलिखित वस्तुओं के साथ संलग्न करके जमा करें:

- इस जानकारी पत्रक अथवा हमारी वैबसाईट से प्राप्त आवेदन पत्र के दोनों पृष्ठों को पूर्णरुप से भरकर हस्ताक्षर करें।
- आवेदक की जन्म एवं शिक्षा प्रमाण-पत्र की 2 प्रतिलिपी। (10वीं की अंकसुची संलग्न करना अनिवार्य। नवीनतम अंकसुची भी संलग्न करें।)
- छः पासपोर्ट आकार के रंगीन फोटो।
- आवेदक के आवासीय प्रमाण की 2 प्रतिलिपी।
- **मास्टर डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी** के लिए पंजीयन शुल्क ₹15000 एवं **डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी** के लिए पंजीयन शुल्क ₹12000 नगद या बैंक खाते में जमा करें। (बैंक जमापर्ची की प्रतिलिपी आवेदन के साथ संलग्न करें एवं मूल प्रति संभाल कर रखें।)
- इन सभी दस्तावेजों को आवेदन की अंतिम तिथी से पूर्व स्पीड पोस्ट अथवा रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा निम्न पतें पर भेजें।

  'स्वदेशी गुरुकुलम्' 59/1, वररुचि मार्ग, फ्रीगंज, उज्जैन - 456010, मध्य प्रदेश

  दूरभाष : 09098835760, 0734-2530033

संपर्क गोष्ठी, प्रशिक्षण एवं मेलें

- स्वदेशी गुरुकुलम् के अंतर्गत उज्जैन, मध्यप्रदेश में समय-समय पर विभिन्न पाठ्यक्रमों एवं अन्य विषयों पर संपर्क गोष्ठी एवं प्रशिक्षण प्रदान किया जायेगा।
- सभी प्रतिभागियों के लिए भोजन एवं ठहरने की व्यवस्था न्यूनतम शुल्क पर उपलब्ध कराई जायेगी।
- गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविर सभी विद्यार्थियों/प्रतिभागीयों के लिए अनिवार्य होगा।
- इन गोष्ठी एवं प्रशिक्षण शिविरों के दौरान सभी विद्यार्थियों को पाठ्य सामग्री एवं आवश्यक चिकित्सकीय उपकरण, औषधी निर्माण उपकरण, स्वदेशी उत्पादन सामग्री तथा उपकरण उचित मुल्य पर उपलब्ध करवाएं जाएंगे। सरल होने पर ऐसे उपकरण बनाने का प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाएगा। इस विषय में यथासंभव सहयोग स्वदेशी गुरुकुलम् की ओर से प्रदान किया जाएगा।
- सभी तरह की परीक्षाएं एवं प्रायोगिक कक्षाएं उज्जैन, मध्यप्रदेश स्थित स्वदेशी गुरुकुलम् में ही आयोजित होंगी।
- आवश्यकता होने पर सामर्थ्य अनुसार किसी भी स्थान पर प्रशिक्षण प्रदान करने की सुविधा स्वदेशी गुरुकुलम् द्वारा प्रदान किए जाने का प्रयत्न किया जाएगा।
- स्वदेशी गुरुकुलम् एवं स्वदेशी मंदिर के संयुक्त तत्वावधान में संपूर्ण भारत में स्वदेशी मेलों का आयोजन किया जाएगा। जिसके माध्यम से जनता में स्वदेशी, पंचगव्य चिकित्सा विज्ञान, भारत की अन्य तकनीकों, ज्ञान, विज्ञान आदि की जानकारी सहज रुप में पहुंचा कर उन्हें जागृत किया जाएगा। इस तरह जागृति फैला कर स्वदेशी उत्पादकों के लिए उत्पादों की मांग, स्वदेशी विक्रेताओं के लिए बाजार एवं चिकित्सकों के लिए सेवा के अवसर प्राप्त होंगे। युवाओं के लिए रोजगार बढ़ेगा, गौशालाएं स्वावलंबी एवं गौपालक समृद्ध होंगे। आम जन को शुद्ध वस्तुएं प्राप्त करना आसान होगा और वे रोगमुक्त भी होंगे। भारत इसी तरह स्वदेशी के मार्ग पर चल कर विदेशी निर्भरता की गंदी आदत से दूर होकर पुनः समृद्ध, स्वावलंबी, स्वाभिमानी एवं विश्वगुरु होगा।

स्वदेशी गुरुकुलम्

भारत सरकार द्वारा प्रवर्तित राष्ट्रीय विकास एजेंसी 'भारत सेवक समाज' से संबद्ध

पंजीकृत कार्यालय : 59/1, वररुचि मार्ग, फ्रीगंज, उज्जैन, मध्य प्रदेश - 456010, दूरभाष : 09098835760, 0734-2530033
ईमेल : **SwadeshiGurukulam@gmail.com**, वेबसाईट : **www.SwadeshiGurukulam.com**

सत्र : 20 - 20
क्रमांक :

आवेदन पत्र

अभ्यर्थी का स्वयं द्वारा सत्यापित फोटो

मास्टर डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी ☐
डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी ☐
सर्टिफिकेट इन पंचगव्य थेरेपी ☐

(उपयुक्त पाठ्यक्रम के सामने सही का निशान लगाएं)

नाम (10वीं/12वीं की अंकसुची के अनुसार) : .....

पिता/पति का नाम : .....

जन्मतिथि एवं आयु : ..... पुरुष ☐ स्त्री ☐

राष्ट्रीयता : ..... धर्म : .....

ज्ञात भाषाएं : .....

शैक्षणिक योग्यता : .....

पंचगव्य चिकित्सा पद्धति में अनुभव : .....

वर्तमान पता (संपर्क हेतु) : .....

: .....

: ..... पिन कोड .....

स्थायी पता : .....

: .....

: ..... पिन कोड .....

मोबाईल/दूरभाष : .....

ईमेल : .....

मैं यह घोषित करता हूँ कि मेरे ज्ञान अनुसार, यहां मेरे द्वारा दी गई जानकारी पूर्णतः सत्य है।

दिनांक : .....

(आवेदक के मातृभाषा में हस्ताक्षर)

.....

आवेदन के लिए आवश्यक सामग्री :

1. आवेदक के 6 पासपोर्ट आकार के रंगीन फोटो।
2. आवेदक की जन्म एवं शिक्षा प्रमाण-पत्र की 2 प्रतिलिपी। (10वीं की अंकसुची संलग्न करना अनिवार्य। नवीनतम अंकसुची भी संलग्न करें।)
3. आवेदक के आवासीय प्रमाण की 2 प्रतिलिपी।
4. **मास्टर डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी** के लिए पंजीयन शुल्क ₹15000 एवं **डिप्लोमा इन पंचगव्य थेरेपी** के लिए पंजीयन शुल्क ₹12000 नगद या बैंक खाते में जमा करें। (बैंक जमापर्ची की प्रतिलिपी आवेदन के साथ संलग्न करें।)

शपथ - पत्र

1. सभी तरह के यात्रा व्यय अभ्यर्थियों को वहन करने होंगे।
2. प्रशिक्षण शिविर, पाठ्य सामग्री, पाठ्यक्रम के अतिरिक्त ऐसी अन्य किसी भी गतिविधी आदि का शुल्क प्रथक होगा एवं अभ्यर्थियों द्वारा देय होगा। शुल्क की सूचना शिविर की तिथी के साथ घोषित की जाएगी।
3. किसी भी स्थिति में पंजीयन एवं अन्य शुल्क लौटाया नहीं जाएगा।
4. ठहरने एवं सोने की व्यवस्था ग्रामीण एवं सामूहिक स्तर की रहेगी। किसी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार की विशेष सुविधा प्रदान नहीं की जाएगी।
5. सभी के लिए भोजन शुद्ध शाकाहारी, सादा, सात्विक एवं यथासंभव जैविक ही होगा।
6. पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण शिविर के दौरान मांसाहारी भोजन, डब्बाबंद/बाहरी भोजन, कोल्ड्रींक, सिगरेट, बीड़ी, शराब तथा किसी भी प्रकार का नशा कड़ाई से प्रतिबंधित रहेगा।
7. पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण शिविर के दौरान मोबाईल, कैमरा, लेपटाप एवं अन्य किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक सामान लाना एवं उपयोग करना सख्त मना है।
8. सभी अभ्यर्थियों को पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण शिविर शुरू करने से पहले अपना इलेक्ट्रोनिक सामान जमा करना अनिवार्य होगा।
9. कृपया अपने साथ किसी भी तरह की कोई मुल्यवान वस्तु जैसे आभुषण, इलेक्ट्रोनिक सामान आदि नहीं लायें।
10. दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएं जैसे दंतमंजन, साबुन, शेंपू, कपड़ें आदि विदेशी ना होकर स्वदेशी होना अनिवार्य है। दैनिक उपयोग में आने वाली शुन्य तकनीक की विदेशी वस्तुएं पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण शिविर के दौरान शिक्षण क्षेत्र में प्रतिबंधित होंगी।
11. पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण शिविर के दौरान कोई भी अभ्यर्थी अपने किसी परिजन या बच्चों को साथ लेकर नहीं आ सकते हैं।
12. किसी भी प्रकार के अस्वस्थ एवं रोगी व्यक्ति इस पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण शिविर में भाग नहीं ले सकते हैं।
13. अभ्यर्थियों को गुरुकुल की दिनचर्या का सख्ती से पालन करना होगा।
14. किसी भी तरह की दुर्घटना होने पर अभ्यर्थी स्वयं जिम्मेदार होगा एवं किसी भी तरह का बीमा या हर्जाना स्वदेशी गुरुकुलम् अथवा हमारी ओर से देय नहीं होगा।
15. यदि कोई अभ्यर्थी उपरोक्त नियमों की अवहेलना अथवा किसी भी तरह के गैरकानूनी कार्य जैसे चोरी, मारपीट, महिला अभ्यर्थियों के साथ छेड़खानी करते हुए पाया गया तो उसे तुरंत पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण शिविर से निष्कासित कर दिया जायेगा।
16. पाठ्यक्रम एवं प्रशिक्षण शिविर के दौरान केवल सभ्य भारतीय परिधान ही स्वीकार्य होंगे। किसी भी तरह के पश्चिमी परिधान जैसे जींस, स्कर्ट आदि एवं छोटे वस्त्र प्रतिबंधित होंगे।
17. आवश्यक होने पर अपने किसी भी नियम एवं शर्त में बदलाव करने का अधिकार स्वदेशी गुरुकुलम् के पास सुरक्षित रहेगा।
18. किसी भी विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र उज्जैन रहेगा।

स्थान : .....

दिनांक : ....

(आवेदक के मातृभाषा में हस्ताक्षर)

आवेदन पत्र भेजने का पता : **'स्वदेशी गुरुकुलम्' 59/1, वररुचि मार्ग, फ्रीगंज, उज्जैन, मध्य प्रदेश - 456010**
दूरभाष : 09098835760, 0734-2530033

www.SwadeshiGurukulam.com

स्वदेशी गुरुकुलम्

59/1, वररुचि मार्ग, फ्रीगंज, उज्जैन 456010, मध्य प्रदेश, भारत
दूरभाष : 0734-2530033, मोबाईल : 09098835760
ईमेल : info@swadeshigurukulam.com, वेबसाईट : www.SwadeshiGurukulam.com